Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

महाराजा तुकोजीराव होल्कर द्वितीय का व्यक्तित्व : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. मंजुला निंगवाल*

* सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (इतिहास) भेरूलाल पाटीदार शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महू (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – मध्य भारत के इतिहास में होल्करवंश का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यह शोध-पत्र इन्दौर के ग्यारहवें शासक महाराजा तुकोजीराव (तुकोजी राव) होल्कर द्वितीय (1835-1886) के व्यक्तित्व का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। उनके व्यक्तित्व को उनके पालन-पोषण, प्रशासनिक निर्णयों, राजनीतिक नीतियों और सांस्कृतिक संरक्षण के आधार पर समझा गया है। उपलब्ध स्रोतों से यह स्पष्ट होता है कि तुकोजीराव द्वितीय परंपरागत दरबारी संवेदनशीलता और व्यावहारिक प्रशासनिक दृष्टिकोण दोनों को साथ लेकर चलने वाले शासक थे। उनका व्यक्तित्व संयम, निष्ठा और क्रमिक सुधारों की प्रवृत्ति से परिपूर्ण था, जिसने उन्नीसवीं शताब्दी में इन्दौर के आधुनिकीकरण को दिशा दी।

शब्द कुंजी– तुकोजीराव होलकर द्वितीय, इंदौर, होलकर वंश, व्यक्तित्व, प्रशासन, आधुनिकीकरण।

प्रस्तावना –इतिहास में शासकों का व्यक्तित्व अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता है क्योंकि उनका स्वभाव और दृष्टिकोण ही राज्य की नीतियों और जनता के भाग्य को आकार देता है। तुकोजीराव होल्कर द्वितीय, जिनका जन्म 3 मई 1835 को हुआ और जिन्होंने 1844 से 1886 तक इन्दौर पर शासन किया, एक ऐसे कालखंड में सक्रिय रहे जब भारत में अंग्रेजी सत्ता स्थापित हो चुकी थी और देसी रियासतें अपनी स्वायत्तता और आधुनिकीकरण के बीच संतुलन साध रही थीं। यह शोध उनके व्यक्तित्व के उन पहलुओं को उजागर करता है जिनमें कृब्रिटिश सत्ता के प्रति निष्ठा, प्रशासनिक व्यवहारिकता, व्यक्तिगत परंपरावाद और सांस्कृतिक संरक्षणकृस्पष्ट दिखाई देते हैं।

तुकोजीराव द्वितीय का बाल्यकाल दरबारी राजनीति और अंग्रेजी रेजिडेंट की देखरेख में बीता। वे मात्र बारह वर्ष की आयु में गद्दी पर बैठे, किन्तु वास्तविक शासन एक परिषद और ब्रिटिश रेजिडेंट के हाथों में रहा। लगभग सोलह वर्ष की आयु से उन्हें प्रशासन में सम्मिलित किया गया और 1852 में पूर्ण अधिकार प्राप्त हुए। इस दौर ने उनके व्यक्तित्व में सावधानी, सत्ता-संरचनाओं के प्रति आदर और परिवर्तन की बजाय क्रमिक सुधार की प्रवृत्ति विकसित की। तुकोजीराव होल्कर द्वितीय का व्यक्तित्व सरल,दयालु और न्यायप्रिय था।वे अपनी प्रजा की समस्याओं को सुनने के लिए अलग से समय निकालते थे।उनका व्यक्तित्वन केवल शासक की दृष्टि से अपितु मानवतावादी दृष्टिकोण से भी प्रेरक है।उनकी ईमानदारी तथा धर्मपरायणता उन्हें अन्य समकालीन शासकों से भिन्न बनाती हैं।

महाराजा कूटनीति में निपुण थे एवं अनावश्यक संघर्षों से अपने राज्य को दूर रखा।1857 के विद्रोह के समय तुकोजीराव ने ब्रिटिश सत्ता के प्रति निष्ठा बनाए रखी। जहाँ कई रियासतों ने विद्रोह का समर्थन किया, वहीं इन्दौर ने स्थिरता का मार्ग अपनाया। यह निर्णय उनके राजनीतिक यथार्थवाद और संयमी व्यक्तित्व को दर्शाता है। वे विद्रोह के अनिश्चित परिणामों की बजाय स्थिरता और राज्य के हित में अंग्रेजों के साथ सहयोग को अधिक उचित मानते थे। इस कारण उन्हें तत्कालीन अंग्रेजी प्रशासन से विश्वास और संरक्षण मिला, जिसने आगे चलकर इन्दौर में सुधारात्मक कदम उठाने की सुविधा दी।यद्यपि तुकोजीराव व्यक्तिगत जीवन में परंपरावादी थे, किन्तु प्रशासन में वे व्यवहारिक और सुधारवादी सिद्ध हुए। 1870 के दशक में उन्होंने प्रसिद्ध प्रशासक सर टी. माधवराव को इन्दौर का दीवान नियुक्त किया। यह निर्णय उनके व्यक्तित्व का एक महत्तवपूर्ण पहलू दर्शाता हैकृवे अपनी सीमाओं को पहचानते थे और प्रशासन को सुदृढ़ करने के लिए योग्य अधिकारियों को बुलाने से संकोच नहीं करते थे।इसके अतिरिक्त उन्होंने होल्कर राज्य रेलवे के निर्माण में निवेश किया, जिससे इन्दौर को बंबई प्रेसीडेंसी की रेल-व्यवस्था से जोड़ा गया। इस कदम ने व्यापार और उद्योग को गति दी।स्पष्ट है कि उनके व्यक्तित्व में दीर्घकालिक दृष्टि और आर्थिक-संस्थागत विकास की सोच विद्यमान थी। वे व्यक्तिगत रूप से अधिकारियों की कार्यप्रणाली पर निगरानी रखते थे।

व्यक्तिगत जीवन में तुकोजीराव परंपरागत शासक थे। उन्होंने दरबार

की रीति-नीति और धार्मिक अनुष्ठानों को बनाए रखा। राजवाड़ा महल को उन्होंने होल्कर पहचान का केंद्र बनाए रखा। किन्तु साथ ही वे अंग्रेज अधिकारियों से मेलजोल रखते और कुछ प्रशासनिक सुधारों में पश्चिमी पद्धतियों को अपनाने के लिए भी तैयार रहते थे। उनका व्यक्तित्व इस प्रकार परंपरा और आधुनिकता का संतुलन प्रस्तुत करता है।वे धार्मिक प्रवृत्ति के शासक थे।वे मंदिरों का निर्माण और जीर्णोद्धार में रुचि रखते थे।इसके साथ ही उन्होंने साधु-संतों और विद्धानों को भी संरक्षण दिया।

तुकोजीराव ने नगर-प्रशासन और स्वच्छता के क्षेत्र में भी पहल की। इन्दौर में नगरपालिका व्यवस्था की प्रारम्भिक नींव उनके शासनकाल में रखी गई। स्वच्छता, कर-व्यवस्था और अनुशासनात्मक प्रबंधन पर उनका विशेष ध्यान था। इससे यह स्पष्ट होता है कि उनका व्यक्तित्व नियमप्रियता, अनुशासन और सार्वजनिक कल्याण की भावना से जुड़ा था। यही कारण है कि इन्दौर बाद के काल में 'स्वच्छता' की परंपरा को आगे बढ़ाने वाला नगर बना।

हालाँकि तुकोजीराव सुधारवादी थे, किन्तु उनकी नीतियाँ अत्यधिक सावधानीपूर्ण और सीमित थीं। वे अंग्रेजों के प्रति अधिक निष्ठावान रहे, जिससे गहन सामाजिक सुधारों की गति धीमी रही। फिर भी, उनके निर्णयों-जैसे रेलवे में निवेश और योग्य प्रशासकों की नियुक्तिकृने आगे चलकर इन्दौर के समग्र विकास का मार्ग प्रशस्त किया। अत: उनके व्यक्तित्व को मध्यमार्गी, व्यवहारिक किन्तु परंपरावादी कहना उचित होगा।

निष्कर्ष- महाराजा तुकोजीराव होल्कर द्वितीय का व्यक्तित्व हमें एक ऐसे शासक के रूप में दिखाई देता है जिसने परंपरा और आधुनिकता का संतुलन साधते हुए राज्य को क्रमिक सुधारों की ओर अग्रसर किया। वे व्यक्तिगत रूप से परंपरावादी, राजनीतिक रूप से सतर्क और प्रशासनिक दृष्टि से व्यवहारिक एवं सुधारोन्मुख थे। उनकी नीतियों ने इन्दौर को स्थिरता, आर्थिक उन्नति और प्रशासनिक सुदृढ़ता प्रदान की। यद्यपि वे किसी क्रांतिकारी सुधारक की तरह नहीं उभरे, परन्तु उनकी सावधानीपूर्ण और व्यावहारिक दृष्टि ने इन्दौर के आधुनिकीकरण की ठोस नींव रखी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. बर्वे, मुन्तजिम बहादुर एम. डब्ल्यू., महाराजा तुकोजीराव होल्कर द्वितीय, शासक इन्दौर का जीवन (इन्दौर: होल्कर स्टेट प्रिंटिंग, 1925)।
2. 'होल्कर स्टेट रेलवे', एफ.आई.बी.आई.एस., विकिपीडिया ।
3. 'तुकोजीराव होल्कर द्वितीय, महाराजा इन्दौर (1835-86)',रॉयल कलेक्शन ट्रस्ट।
4. 'इन्दौर: इतिहास एवं धरोहर', स्मार्ट सिटी इन्दौर (आधिकारिक वेबसाइट)।
5. कलकत्ता, बॉम्बे और शिमला: बॉर्न एंड शेफर्ड (सक्रिय 1864-1900) -तुकोजीराव होल्कर द्वितीय, इंदौर के महाराजा (1835-86) https://share.google/QWgFmg3JBSQARuEYh
6. 'सर टी. माधवराव', विकिपीडिया

****